Organic Farming – A Complete Guide for Farmers (Developed and Written by Ravi S. Mishra, Founder of Kaka Enterprises) Email – ceo@kakaenterprises.in Mob - +91 - 9971267813

जैविक खेती – किसानों के लिए एक संपूर्ण मार्गदर्शिका

1. जैविक खेती का परिचय

जैविक खेती एक कृषि उत्पादन पद्धति है जो पूरी तरह से प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर आधारित होती है। इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की जगह कंपोस्ट, हरी खाद, और जैविक कीट नियंत्रण उपायों का उपयोग किया जाता है।
जैविक खेती का मूल उद्देश्य मिट्टी, पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य को बनाए रखना और बेहतर बनाना है। यह पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देती है और जैव विविधता का संरक्षण करती है।

पारंपरिक खेती में रसायनों का अत्यधिक उपयोग हुआ, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता खराब हुई, जल प्रदूषण बढ़ा और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसके विपरीत, जैविक खेती मिट्टी को पुनर्जीवित करती है और सुरक्षित व पोषक आहार सुनिश्चित करती है।

जैविक खेती चार प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है:

- स्वास्थ्य
- पारिस्थितिकी
- न्याय
- देखभाल

जैविक खेती केवल एक कृषि तकनीक नहीं है, बल्कि प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने का एक तरीका है।

2. जैविक खेती के लाभ

जैविक खेती के अनेक लाभ हैं, जो केवल किसानों के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज और पर्यावरण के लिए फायदेमंद हैं।

2.1 पर्यावरणीय लाभ

- प्राकृतिक खाद और हरी खाद से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है।
- मिट्टी की संरचना और जैविक तत्वों के कारण जल संरक्षण होता है।
- भूजल और जल निकायों का प्रदूषण कम होता है।
- रासायनिक कीटनाशकों से दूर रहकर जैव विविधता का संरक्षण होता है।
- कार्बन अवशोषण को बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिलती है।

2.2 स्वास्थ्य लाभ

- जैविक आहार में सिंथेटिक रसायन, एंटीबायोटिक्स और हार्मोन नहीं होते।
- जैविक भोजन के सेवन से विषैले पदार्थों के संपर्क से बचाव होता है।
- जैविक फसलों में विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट जैसे पोषक तत्व अधिक होते हैं।

2.3 आर्थिक लाभ

- जैविक उत्पाद बाजार में सामान्य उत्पादों से ऊंची कीमत पर बिकते हैं।
- प्रमाणित जैविक उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में स्थान मिलता है।
- रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर खर्च कम होता है, जिससे लागत घटती है।

2.4 सामाजिक लाभ

- सतत कृषि पद्धतियों के जरिए ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलता है।
- विविध कृषि प्रणाली से खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है।
- जैविक खेती की श्रम-सघन प्रकृति के कारण ग्रामीण इलाकों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

3. जैविक खेती का भविष्य और बाजार

जैविक खेती का भविष्य उज्ज्वल है, चाहे वह भारत हो या विश्व स्तर पर। स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता जैविक उत्पादों की मांग को बढ़ा रही है।

3.1 वैश्विक जैविक बाजार

- रिपोर्टों के अनुसार, 2020 में वैश्विक जैविक खाद्य बाजार का मूल्य 120 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक था।
- यूरोप और उत्तरी अमेरिका जैविक उत्पादों के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं।

3.2 भारत में जैविक बाजार

- भारत जैविक खाद्य उत्पादन में अग्रणी देशों में से एक है।
- घरेलू जैविक बाजार लगभग 20-25% वार्षिक दर से बढ़ रहा है।
- दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे शहरों में जैविक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

3.3 निर्यात के अवसर

- भारत जैविक चाय, मसाले, चावल, कॉफी, फल और सब्जियां निर्यात करता है।
- अमेरिका, यूरोपीय संघ, कनाडा और मध्य पूर्व भारत के प्रमुख जैविक उत्पाद बाजार हैं।

3.4 किसानों के लिए संभावनाएं

- जैविक खेती अपनाकर किसान अपनी फसलों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।
- जैविक प्रमाणन से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नए अवसर खुलते हैं।

4. जैविक खेती के लिए सरकारी सहायता और योजनाएं

भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारें जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं और सब्सिडी प्रदान कर रही हैं।

4.1 परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)

- 2015 में राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA) के अंतर्गत शुरू की गई।
- समूह आधारित जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।
- किसानों को जैविक इनपुट्स, प्रमाणन और विपणन के लिए सहायता मिलती है।

4.2 मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट फॉर नॉर्थ ईस्टर्न रीजन (MOVCDNER)

- पूर्वोत्तर राज्यों में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष पहल।
- उत्पादन से विपणन तक जैविक उत्पादों की पूरी श्रृंखला का विकास किया जाता है।

4.3 राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम (NPOP)

- एपीडा (APEDA) द्वारा संचालित।
- जैविक उत्पादन के मानकों को निर्धारित करता है और प्रमाणन सुविधा प्रदान करता है।
- भारतीय जैविक उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचाने में मदद करता है।

4.4 जैविक प्रमाणन योजनाएं

- भारत में सहभागिता आधारित गारंटी प्रणाली (PGS)।
- तीसरे पक्ष द्वारा प्रमाणन (NPOP के अंतर्गत)।
- प्रमाणन से उत्पाद की विश्वसनीयता बढ़ती है और निर्यात के लिए अनिवार्य होता है।

4.5 अन्य सरकारी सहायता

- जैविक उर्वरकों और वर्मी कम्पोस्ट इकाइयों के लिए वित्तीय सहायता।
- जैविक बीज उत्पादन और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए सब्सिडी।
- जैविक उत्पादों के लिए बाजार स्थापन और ब्रांड प्रमोशन।

5. जैविक खेती में चुनौतियां

जैविक खेती के कई लाभों के बावजूद, कुछ चुनौतियां भी हैं:

- संक्रमण काल: रासायनिक खेती से जैविक खेती में परिवर्तन के लिए समय चाहिए।
- प्रमाणन लागत: प्रारंभिक प्रमाणन महंगा और समय लेने वाला हो सकता है।
- जागरूकता की कमी: किसानों को प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की आवश्यकता है।
- विपणन समस्याएं: उचित बाजार तक पहुंच बनाना आज भी कई किसानों के लिए कठिन है।

इन चुनौतियों को सही योजना और सरकारी सहायता से आसानी से दूर किया जा सकता है।

6. जैविक खेती शुरू करने के चरण

1. मिट्टी परीक्षण और उर्वरता प्रबंधन।
2. स्थानीय जलवायु के अनुसार फसल का चयन।
3. जैविक बीज और रोपण सामग्री का उपयोग।
4. खाद बनाने और जैविक कीटनाशक तैयार करने की व्यवस्था।
5. जल संरक्षण तकनीकों का पालन।
6. जैविक प्रमाणन के लिए आवेदन।
7. सीधे विपणन या जैविक ब्रांड्स से जुड़ाव।

7. महत्वपूर्ण सरकारी और संदर्भ लिंक

- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय: https://agricoop.gov.in
- परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY): https://pkvy.nic.in
- एपीडा जैविक पोर्टल: https://apeda.gov.in/apedawebsite/organic/Organic_Products.htm
- किसान पोर्टल (भारत सरकार): https://farmer.gov.in
- राष्ट्रीय जैविक खेती केंद्र (NCOF): https://ncof.dacnet.nic.in
- मृदा स्वास्थ्य कार्ड पोर्टल: https://soilhealth.dac.gov.in
- कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (APEDA): https://apeda.gov.in
- नाबार्ड (जैविक खेती के लिए योजनाएं): https://www.nabard.org

8. निष्कर्ष

जैविक खेती केवल एक कृषि पद्धति नहीं है; यह प्रकृति और भविष्य की पीढ़ियों के प्रति एक जिम्मेदारी है।
जैविक खेती अपनाकर किसान न केवल बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित कर सकते हैं बल्कि बाजार में प्रीमियम दाम प्राप्त कर सकते हैं।
सरकारी सहायता, उपभोक्ता मांग और वैश्विक पर्यावरणीय चिंताओं के चलते जैविक खेती का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है।
अब समय आ गया है कि किसान जैविक खेती को अपनाएं और एक स्वस्थ, हरित और समृद्ध भारत के निर्माण में योगदान दें।

Organic Farming – A Complete Guide for Farmers

1. Introduction to Organic Farming

Organic farming is a method of agricultural production that relies entirely on natural processes, using organic materials such as compost, green manure, and biological pest control instead of chemical fertilizers and pesticides. The core principle of organic farming is to maintain and enhance the health of soil, ecosystems, and people. It promotes ecological balance and conserves biodiversity.

In traditional farming methods, chemical inputs were heavily used, which resulted in soil degradation, water pollution, and adverse health effects. In contrast, organic farming rejuvenates the soil and ensures that the food produced is safe and nutritious.

Organic farming is based on four important principles:

- Health
- Ecology
- Fairness
- Care

The movement of organic farming is not just about growing food, it is a way of life aligned with nature.

2. Advantages of Organic Farming

Organic farming offers numerous advantages, not just to farmers but to the environment and society as a whole. Some of the key benefits are:

2.1 Environmental Benefits

- Enhances soil fertility through natural composting and green manures.
- Conserves water by promoting soil structure and organic matter.
- Reduces pollution of groundwater and nearby water bodies.
- Preserves biodiversity by avoiding harmful chemical pesticides.
- Helps mitigate climate change by increasing soil carbon sequestration.

2.2 Health Benefits

- Organic food is free from synthetic chemicals, antibiotics, and hormones.
- Consumption of organic food reduces exposure to toxic substances.
- Nutritional content in organic crops is generally higher, including vitamins and antioxidants.

2.3 Economic Benefits

- Organic products often fetch higher prices in the market.
- Certification of organic produce can open access to premium national and international markets.
- Reduces input costs by eliminating the need for synthetic fertilizers and pesticides.

2.4 Social Benefits

- Encourages rural development through sustainable agriculture practices.
- Enhances food security by promoting diversified and resilient farming systems.
- Creates more employment opportunities in rural areas due to the labor-intensive nature of organic farming.

3. Future Market of Organic Farming

The future of organic farming is very promising, both in India and globally. Increasing consumer awareness about health and environmental sustainability is driving the demand for organic products.

3.1 Global Organic Market

- According to reports, the global organic food market was valued at over USD 120 billion in 2020 and is expected to grow rapidly.
- Europe and North America are currently the largest consumers of organic products.

3.2 Indian Organic Market

- India is among the largest producers of organic food.
- The domestic organic market is growing at an annual rate of around 20-25%.
- Cities like Delhi, Mumbai, Bangalore, and Hyderabad are witnessing a surge in organic product consumption.

3.3 Export Opportunities

- India exports organic products such as tea, spices, rice, coffee, fruits, and vegetables.
- Major export destinations include the USA, European Union, Canada, and the Middle East.

3.4 Scope for Farmers

- Farmers can earn premium prices by adopting organic farming practices.
- Organic certification opens the doors to lucrative national and international markets.

4. Government Support and Schemes for Organic Farming

The Indian government and various state governments are actively promoting organic farming through various schemes and subsidies.

4.1 Paramparagat Krishi Vikas Yojana (PKVY)

- Launched in 2015 under the National Mission on Sustainable Agriculture (NMSA).
- Aims to promote cluster-based organic farming with financial support.
- Farmers are provided assistance for organic inputs, certification, and marketing.

4.2 Mission Organic Value Chain Development for North Eastern Region (MOVCDNER)

- Special initiative for promoting organic farming in the North-Eastern states of India.
- Helps in developing complete value chains for organic produce from production to marketing.

4.3 National Programme for Organic Production (NPOP)

- Launched by APEDA (Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority).
- Sets standards for organic production and facilitates certification.
- Helps Indian organic products gain access to international markets.

4.4 Organic Certification Schemes

- Participatory Guarantee System (PGS) for India.
- Third-party certification under NPOP.
- Certification provides credibility to organic produce and is often mandatory for exports.

4.5 Other Support Measures

- Financial assistance for organic inputs such as bio-fertilizers, vermicompost units.
- Subsidies for organic seed production and training programs.
- Establishment of organic produce markets and brand promotion.

5. Challenges in Organic Farming

Despite the advantages, organic farming also faces several challenges:

- Transition period: Soil needs time to recover from chemical farming practices.
- Certification costs: Initial certification can be expensive and time-consuming.
- Lack of awareness: Farmers need training and capacity building.
- Marketing issues: Finding the right market for organic produce is still a challenge for many farmers.

However, with proper planning and government support, these challenges can be overcome.

6. Steps to Start Organic Farming

1. Soil testing and fertility management.

2. Crop selection based on local climatic conditions.
3. Use of organic seeds and planting materials.
4. Setting up composting units and bio-pesticide preparations.
5. Water conservation practices.
6. Application for organic certification.
7. Direct marketing or tie-ups with organic brands and retailers.

7. Important Government and Reference Links

- Ministry of Agriculture and Farmers Welfare: https://agricoop.gov.in
- Paramparagat Krishi Vikas Yojana (PKVY): https://pkvy.nic.in
- APEDA Organic Portal: https://apeda.gov.in/apedawebsite/organic/Organic_Products.htm
- Farmer Portal (Government of India): https://farmer.gov.in
- National Centre of Organic Farming (NCOF): https://ncof.dacnet.nic.in
- Soil Health Card Portal: https://soilhealth.dac.gov.in
- Agricultural and Processed Food Products Export Development Authority (APEDA): https://apeda.gov.in
- NABARD (Schemes for Organic Farming): https://www.nabard.org

8. Conclusion

Organic farming is not just a method of farming; it is a sustainable way of living that respects nature and future generations. By adopting organic farming practices, farmers can ensure better health for themselves, their families, and consumers. Additionally, they can achieve better economic returns through premium pricing in the domestic and export markets. With government support, increasing consumer demand, and global environmental concerns, the future of organic farming is very bright.

It is time for farmers to embrace organic farming and contribute towards building a healthier, greener, and prosperous India.

Ravi S. Mishra is the Founder of **Kaka Enterprises** and an emerging entrepreneur. He has developed multiple platforms and websites aimed at connecting farmers and the general public with government schemes, innovative farming techniques, and digital resources. His mission is to empower society through modern technology and to open new opportunities for farmers.